विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

वर्ष 4 अंक 02
पृष्ठ 24
मुजफ्फरपुर, मंगलवार
30 जून 2015
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 2.50

दैनिक जागरण

मेहसी में लीची पौध प्रसारण केंद्र शीघ्र

मोदी सरकार ने लिया था चंपारण की लीची को विश्व के पटल पर लाने का निर्णय

संजय कुमार उपाध्याय, मोतिहारी (पू. चंपारण)

भारतवर्ष में अपनी गुणवत्ता व मिठास के लिए प्रसिद्ध पूर्वी चंपारण के मेहसी की लीची को विश्व पटल पर आने में अब देर नहीं है। इसके लिए केंद्र सरकार ने पहल तेज कर दी है। केंद्र ने मेहसी में लीची पौध प्रसारण सह प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना का निर्णय लिया है। इसके लिए सात करोड़ की योजना स्वीकृत की गई है। इसकी स्थापना शीघ्र हो इसके लिए सरकार गंभीर है।

- केंद्र सरकार ने स्वीकृत की सात करोड़ की योजना
- केंद्रीय कृषि मंत्री ने दी जानकारी, एक करोड़ की राशि भेजी जा चुकी है लीची पौध संरक्षण अनुसंधान संस्थान मुजफ्फरपुर को

- राज्य सरकार से की मेहसी के पास बंद पड़े परसौनी कृषि फार्म की 25 एकड़ जमीन की मांग
- बिहार के मुख्यमंत्री को करनी चाहिए पहल, सत्ताधारी दल से जुड़े चंपारण के नेताओं को समझाना चाहिए सीएम को : राधामोहन

दैनिक जागरण से खास बातचीत में सोमवार को केंद्रीय कृषि मंत्री राधामोहन सिंह ने उक्त जानकारी देते हुए कहा कि इस योजना पर काम करने के लिए एक करोड़ की राशि भी सरकार ने विमुक्त कर दी है। राशि लीची पौध संरक्षण अनुसंधान संस्थान मुजफ्फरपुर को भेजी जा चुकी है। राज्य सरकार से मेहसी से सटे परसौनी में बंद पड़े कृषि फार्म की 25 एकड़ जमीन की मांग केंद्र सरकार ने की। बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री जीतनराम मांझी ने इस दिशा में काम भी शुरू किया। लेकिन, वर्तमान मुख्यमंत्री का ध्यान इस पर नहीं है। राज्य सरकार जमीन से जुड़ी संचिका पर कुंडली मारकर बैठी है। इस फेरे में जनहित का एक बड़ा काम गति नहीं ले रहा है। बिहार के मुख्यमंत्री को चाहिए कि जहां पूरे भारत में सबसे उत्तम क्वालिटी की लीची पाई जाती है उस मिट्टी के लिए विचार करें और केंद्र की ओर से भेजे गए जमीन के प्रस्ताव पर तमाम प्रक्रिया अविलंब पूरी कराएं। ताकि यहां के लीची उत्पादकों का भला हो और मेहसी की लीची को विश्व के पटल पर भी पहचान मिले। मंत्री ने सत्ताधारी दल से जुड़े चंपारण के नेताओं को कहा कि वे भी मुख्यमंत्री जी को मेहसी की लीची की विशेषता, महत्व और यहां के लोगों की मांग से अवगत कराएं। ताकि वे इस विषय पर संजीदा हों। किसान व जनहित के विषयों पर राजनीति नहीं होनी चाहिए। ऐसे विषयों पर काम होना चाहिए। सिर्फ काम होना चाहिए।